गुरु जी पूरे

सुथरे शाह जी बचपन से ही विनोदप्रिय थे। वे अपने धर्म पिता श्री हरगोबिन्द जी से बहुत प्रेम करते थे। जब कभी गुरु जी कोई उत्सव मनाते तो दूर-दूर के प्रांतों व गाँवों से संगतें इकट्ठी होतीं। पर सुथरे शाह जी उन्हें माथा टेके बगैर भोजन न करते। कभी-कभी भीड़ इतनी अधिक हो जाती कि सुथरे शाह जी उन तक पहुँचने के लिए कोई भी तरीका अपनाते।

एक बार दरबार सजा हुआ था। गुरु हरगोबिन्द साहिब जी गद्दी पर विराजमान थे। भीड़ बहुत अधिक थी। कई घण्टों तक इंतजार के पश्चात् भी वे गुरु जी तक पहुँचने में असमर्थ रहे। तब उन्होंने एक उपाय सोचा। सुथरे शाह जी अपना सिर मुंडवा कर बाहर ड्योढ़ी पर बैठ गए। और कहने लगे 'गुरु जी पूरे' जो भी आता उसे वहीं बिठा लेते व कहते 'गुरु जी पूरे'।

गुरु जी ने देखा कि सुथरा नज़र नहीं आ रहा और बाहर से संगत आनी भी बन्द हो गई है तो सोचा जरूर इसने कोई शरारत की होगी। गुरु जी गद्दी से उठे व बाहर आए तो देखा 'सुथरा' सिर मुंडवा कर बैठा है और सारी संगत भी वहीं जमा हो रही है। जैसे ही गुरु जी बाहर आए सुथरे शाह जी ने अपने गुरु जी के चरणों में माथा टेका व ऊँची आवाज़ में बोले - 'गुरु जी पूरे' अर्थात् गुरु जी पूर्ण ज्ञानी हैं। पूर्ण ब्रह्म को पा चुके है। गुरु जी ने अपने लाडले को उठाया व गले से लगा लिया।